The Bolshevik Revolution of 1917

सोवियत संघ की एक अपनी पृथक परम्परा रही है। प्रत्येक युद्ध अथवा संघर्ष के बाद इसकी व्यवस्था में कोई-न कोई महान परिवर्तन अवश्य ही हुआ है।
इतिहास इसका साक्षी है।
क्रीमिया युद्ध का प्रभाव दास-मुक्ति पर पड़ा, 1905 ई० के रूस-जापान युद्ध के परिणामस्वरूप ड्यूमा की स्थापना हुई तथा शासन के प्रयोग प्रजातंत्र प्रारम्भ हुआ।
1914-1918 के प्रथम विश्व युद्ध में रूस का सम्मिलित होना महान रूसी क्रान्ति के रूप में फलित हुआ, रूस में साम्यवाद की स्थापना के साथ-साथ विश्व के इतिहास की धारा को ही एक नया मोड़ प्रदान किया।
लेनिन ने अर्थवादियों से "इस्क्रा" के माध्यम से युद्ध प्रारम्भ किया। 1901 से 1904 तक श्रमिक आन्दोलन क्रान्तिकारी रूप धारण करता गया, परिणामस्वरूप अर्थवादियों को पराजय का सामना करना पड़ा और "इस्क्रा" की क्रान्तिकारी नीति की विजय होती गयी।
सामाजिक-जनवादियों के बिखरे हुए दल "इस्क्रा" द्वारा 17 जुलाई 1903 में दूसरी पार्टी प्रारम्भ हुई।
कांग्रेस में 26 संस्थाओं से 43 प्रतिनिधि एकत्र हुए।

कांग्रेस का मुख्य उद्देश्य उन सिद्धांतों एवं संगठन - नीति के आधार पर जिनका "इस्का" ने निर्देश और प्रचार किया था, वास्तविक पार्टी का निर्माण करना था।
पार्टी में रूसी सामाजिक जनवादी पार्टी दो दलों में विभाजित हुई - "बोल्शेविक और मेन्शेविक" बोल्शेविकों और मेंशेविकों के मतभेद की जड़ संगठन का प्रश्न था।
पार्टी में फूट डालने का कार्य उन्होंने किया। टेखानौफ की सहायता से उन्होंने "इस्का" और केन्द्रीय समिति का प्रयोग अपनी लक्ष्य-सिद्धि अर्थात पार्टी में फूट डालने के लिए किया। तीसरी कांग्रेस बुलाने के लिए उन्होंने स्थानीय संस्थाओं में आन्दोलन किया और ट्वेर्योद बाम का अपना पृथक पत्र निकाला।
पहली रूसी क्रान्ति के समय बोल्शेविक दो भिन्न राजनीतिक दलों के रूप में कार्य कर रहे थे।

प्रथम महायुद्ध काल में रूस की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी थी। शहरी क्षेत्र में अनाज की कमी हो गयी थी। परिणाम स्वरूप अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गयी।
सरकारी के विरुद्ध लोगों में भीषण प्रतिक्रिया उत्पन्न हो गई।
मार्च १९१७ ई० में क्रान्ति हुई तथा प्रिंस लोफ के नेतृत्व में एक अस्थायी सरकार की स्थापना की गई।

Scanned with CamScanner

आर्थिक समस्याओं के समाधान मे भी यह सरकार विफल रही।
चार महीने के अन्दर ही करने की नेतृत्व मे एक नवीन सरकार की स्थापना हुई पर यह भी विफल रही।
जर्मनी के साथ अभी युद्ध चल ही रहा था, आर्थिक व्यवस्था के लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ ज्यो की ज्यो वर्तमान थी।
अस्थायी सरकार सुधार करना चाहती थी, किन्तु कर नही सकी।
अन्न के व्यापार को राज्य के एकाधिकार के अन्तर्गत ले लिया तथा मूल्य-नियन्त्रण का प्रयास प्रारम्भ किया,
तत्कालीन परिस्थितियो के अन्तर्गत बहुत ही कम कार्य किया जा सका।
1917 ई० मे रूस मे वास्तव मे दो क्रान्तियाँ हुई, पहली क्रान्ति मार्च मे, तथा दूसरी क्रान्ति 7 नवम्बर 1917 को हुई सत्ता साम्यवादी दल के हाथ मे आ गयी।
पहली क्रान्ति के समय लेनिन स्विटजरलैंड मे था।
अप्रैल 1917 ई० मे वह रूस पहुँचा और आते ही स्थिति पूर्णतया परिवर्तन हो गया। अपनी इतिहास प्रसिद्ध "अप्रैल थीसिस" लिखी और देश से यह अपील की तत्कालीन अस्थायी सरकार, जो मध्य वर्ग की सरकार थी, विवश करे कि वह

Date
Page

शीघ्र सर्वहारा एवं किसानों की प्रतिनिधि सोवियत सरकार को सत्ता हस्तांतरित कर दे।

नवम्बर की प्रसिद्ध क्रांति के परिणामस्वरूप रूस में एक नये प्रकार के राज्य तथा एक नये प्रकार के प्रजातन्त्र " श्रमिक वर्ग का प्रजातन्त्र " की स्थापना हुई।

क्रांति ने विश्व में समाजवाद एवं साम्यवाद की धारणा को पहले-पहले मूर्त रूप दिया। जनता ही इतिहास का निर्माण करती है।

लेनिन तथा बोल्शेविक दल का कुछ लोग विरोध भी करते थे।

आलोचकों का यह कहना था कि जारशाही जैसे निरंकुश एकतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था के समाप्त होते ही समाजवाद एवं सर्वहारा क्रांति की बातें करना बिल्कुल आदर्शवादिता है। बोल्शेविक को आलोचक उन अधीर समाजवादियों के अधकचरे चिंतन का परिणाम बतलाते थे जो " आधी छोड़ सारी को धावे, आधी बचे न सारी पावे " वाली कहावत को चरितार्थ करते हैं। लेनिन ने अपनी " अप्रैल थीसिस " में यह स्पष्ट शब्दों में लिखा था।

हमारा कार्य निकट भविष्य में समाजवाद की स्थापना करना नहीं वरन् समाज में होनेवाली वस्तुओं के उत्पादन एवं वितरण को मजदूरों एवं किसानों की प्रतिनिधि संस्था " सोवियत " के नियन्त्रण में लाना है।

अस्थायी सरकार की विफलता के बाद 7 नवम्बर 1917 ई० को लेनिन के

Scanned with CamScanner

नेतृत्व में बोल्शेविक दल बलपूर्वक सत्ता अपने हाथ में कर ली और बोल्शेविक दल के हाथ में राजनीति सत्ता आने से रूसी क्रांति की प्रक्रिया पूरी हो गई।
लेनिन ने किसानों एवं मजदूरों की सहायता से इस क्रांति के बाद सर्वहारा दल के अधिनायकतन्त्र की स्थापना का इतिहास-प्रसिद्ध प्रयास प्रारंभ किया।

नवम्बर 1917 की क्रांति की सफलता के कारण :→

नवम्बर 1917 की क्रांति की सफलता के कई कारण थे।

(1) क्रांति का नेतृत्व कर्मठ एवं निष्ठावान व्यक्तियों के हाथों में था।

(2) रूस की क्रांति ऐसे समय में घटित हुई थी जबकि सारा यूरोप प्रथम विश्व-युद्ध की आग में झुलस रहा था।

(3) लगातार युद्ध एवं आर्थिक कष्टों के कारण केवल किसान एवं मजदूर ही नहीं, परन्तु सैनिक भी त्रस्त थे, इनकी सहानुभूति भी बोल्शेविक दल की साथ थी।

(4) क्रांति का मुख्य भार औद्योगिक श्रमिकों पर था, वे सौभाग्य से उन्होंने किसानों की भी सहानुभूति प्राप्त की इन्होंने जमकर इनका साथ दिया।

कुछ बड़े-बड़े जमींदार बड़े-बड़े किसान तथा जार के परिवार के लोग क्रांति के विरुद्ध अवश्य थे, इनकी संख्या बहुत ही कम थी,

Scanned with CamScanner

क्रांति की प्रगति में बाधक नहीं सिद्ध हो सके।
साम्यवादी दल के जिन सिद्धांतों का प्रतिपादन क्रांति में किया गया था वे भी बिल्कुल स्पष्ट थे।
ये सिद्धांत थे मानव को शांतिमय जीवन व्यतीत करने का अधिकार है, उसे कार्य करने का हक है, वह किसी का शोषण ही करेगा, और न किसी के द्वारा शोषित ही होगा तथा समाज के सभी लोगों को लिंग जाति अथवा धर्म के भेद-भाव को छोड़कर समाज के भौतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के पूरा-पूरा उपयोग का अधिकार होना चाहिए।

Scanned with CamScanner